अनपढ़ बनाए रखने की साजिश। रोटी कपडा और मकान के बाद जिस देश मे पहिली, या कहे एकमात्र आवश्यकता साक्षरता और शिक्षा हैं, वहाँ एैसी दृष्टहिनता या तो मुर्खता के कारण है या फिर धूर्तता के कारण। हो सकता है की जिन बहुराष्ट्रीय कंपनियो के आतंक और वर्चस्व को रोकने की आवाजे उठाई जा रही है, उन्ही की गहरी पकड हमारी सारी आर्थिक और राष्ट्रीय नितियों को तय कर रही है। क्योंकी जिन चीजों पर छूट दी गयी है वे सभी तो बाहर से आती है। कहीं ऐसा तो नही है किं आंतरराष्ट्रीय इलेक्ट्राँनिक कंपनियॉ जिन रियायतों और दरियादिली के साथ भीतर तक घुस कर “कम्पुटर युग” ला रही है, उन्हों ने हमारे कर्णधारों की ही सबसे पहले रोबो या मशीन-मानवो में बदल डाला हैं। खैर,यहतोसाफ ही हैं कि कम्प्यूटर के क्षेत्र मे पुर्जे सब बाहर से आयात होंगं और भारतीय उद्योगपती सिर्फ उन्हें जोडेगा-पेंच कसो, अपना ठप्पा लगाओं और बेच दो। न किसी अनंसंधान की जरूरत है, न विकास की। दगते हुए उद्योग के लिए यह शार्ट कट कितना आत्मघाती है, यह बताने की जरूरत नही है।

अगले दसियो साल उसे परोपजीवी ही बनकर रहना है। यानी वे मुलत: उद्योपती नही, बाहरी माल के लिए सिर्फ क्लियरिंग एजंटो के रूप में काम करेंगे।